संगोष्ठी कार्यक्रम

31 मार्च 2022, गुरूवार

1.	पंजीकरण एवं अल्पाहार	9.30 से 10.30
2.	उद्घाटन सत्र	10.30 से 11.30
3.	चाय	11.30 से 11.45
4.	प्रथम – तकनीकी सत्र जनसंख्या असंतुलन एवं राष्ट्रीय सुरक्षा	11.45 से 1.15
5.	भोजन	1.15 से 2.00
6.	द्वितीय – तकनीकी सत्र जनसंख्या असंतुलन एवं आर्थिक विकास	2.00 से 3.30
7.	समापन सत्र	3.30 से 4.00

आवश्यक सूचनाएं

1. पंजीकरण की सुविधा ऑनलाईन गूगल फार्म एवं ऑफलाइन दोनों ही रहेगी। पंजीकरण शुल्क **200/-** है।
2. चयनित शोध पत्र **ISBN** पुस्तक में प्रकाशित किए जाएंगे।
3. प्रमाण पत्र समापन सत्र तक कि उपस्थिति पर ही देय हैं।
4. 25 मार्च तक सूचित करने पर ही आवास व्यवस्था उपलब्ध करवाना संभव होगा।
5. Google Form Link – https://forms.gle/rQmGqmdQC3sv72Lz5

संपर्क सूत्र

प्रो. दिग्विजय भटनागर
93513 88584

अनुराग सक्सेना
99836 22222

स्वराज-75

राष्ट्रीय संगोष्ठी

एक दिवसीय

जनसांख्यिकीय असंतुलन : राष्ट्रीय सुरक्षा एवं आर्थिक विकास

31 मार्च 2022, गुरूवार
स्थान : प्रताप गौरव केन्द्र, उदयपुर

आयोजक
इतिहास विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय
एवं
प्रताप गौरव केन्द्र, उदयपुर

डॉ. कैलाश सोडाणी
निदेशक संगोष्ठी

प्रो. दिग्विजय भटनागर
आयोजन सचिव

अनुराग सक्सेना
समन्वयक

विश्वविद्यालय एवं विभाग–

दक्षिण राजस्थान में उच्च शिक्षा के विकास हेतु 1962 ई. में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय (पूर्व नाम उदयपुर विश्वविद्यालय) की स्थापना की गई। यह विश्वविद्यालय अरावली पर्वत श्रृंखलाओं एवं जनजातीय समुदाय के मध्य स्थित है। विश्वविद्यालय का कार्यक्षेत्र उदयपुर, राजसमंद, सिरोही एवं चित्तौड़ तक विस्तृत है। इतिहास विभाग भी विश्वविद्यालय की स्थापना काल से ही इसका अभिन्न अंग रहा है। संकाय सदस्य अकादमिक एवं अध्ययन कार्य के साथ विभिन्न शोध परियोजनाओं एवं अकादमिक आयोजन के माध्यम से क्षेत्रीय, सांस्कृतिक एवं जनजातीय इतिहास पर कार्य कर रहे है।

प्रताप गौरव केंद्र–

वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप समिति के माध्यम से प्रताप गौरव केंद्र का निर्माण कार्य 2008 से प्रारंभ हुआ जो कि 2016 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के परम प. पू. सरसंघचालक मोहनराव जी भागवत द्वारा लोकार्पण करने के साथ ही आमजन को समर्पित किया गया। प्रताप गौरव केंद्र अपने स्थापना काल से ही प्रताप के आदर्शों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कर रहा है। पर्यटकों के लिए यह आकर्षण का केन्द्र बन चुका है। महाराणा प्रताप की 57 फीट ऊंची प्रतिमा के दर्शन के साथ-साथ हल्दीघाटी विजय युद्ध दीर्घा, मेवाड़ रत्न दीर्घा, रॉबोटिक शो, लाइट एंड साउंड शो, भारत दर्शन, महाराणा प्रताप चित्र प्रदर्शनी एवं डाक्यूमेंट्री फिल्म के माध्यम से मेवाड़ के गौरवशाली इतिहास से परिचित कराया जाता है।

विषय वस्तु–

अनादि काल से ही भारत देश अपनी संस्कृति एवं परम्पराओं के वैशिष्ट्य, ज्ञान-विज्ञान तथा मानव सभ्यता के उच्चतम आदर्शों के शिखर पर विराजमान रहा है। जहां हड़प्पा सभ्यता अपनी समकालीन सभ्यताओं में समृद्ध एवं उत्कृष्ट थी वहीं वैदिक सभ्यता विश्व की प्राचीन उच्चतम बौद्धिक प्रगति का प्रतिनिधित्व करती है। भारत के हजारों वर्षों के इतिहास में ऐसी कई महान् विभूतियाँ हुई जिसने राष्ट्र की समृद्धि एवं ज्ञान एवं विज्ञान के विकास में महत्ती भूमिका निभाई। यहां की सांस्कृतिक उत्कृष्ठता एवं वैभव से आकर्षित होकर बाहरी आक्रांता यहां आते रहें। स्थानीय शक्तियों का उनसे दीर्घकाल तक प्रतिरोध बना रहा। लंबे समय प्रतिरोध एवं संघर्ष के बाद 15 अगस्त 1947 में भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। स्वतंत्रता के इस संघर्ष में हजारों देशभक्तों ने अनाम रहते हुए इस महायज्ञ में आहुति दी। उन सभी हुतात्माओं के पुण्य स्मरण के साथ-साथ अवसर है स्वराज-75 के माध्यम से 75 वर्षों की हमारी जिजीविषा, हमारे उद्यम, हमारी प्रतिभाओं को सराहने की, स्मरण करने की एवं प्रोत्साहन देने की, जिनकी बदौलत ही हम अनेक उतार-चढ़ाव झेलने के बाद आज विश्व परिदृश्य में उन चुनिंदा राष्ट्रों में से एक है जो विश्व को नेतृत्व देने की क्षमता रखते है।

एक तरफ जब भारत विश्व के सशक्त एवं आधुनिक राष्ट्र के रूप में उभर रहा है। दूसरी ओर उसे कई चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है। ऐसी ही चुनौतियों में जनसांख्यिकीय असंतुलन एक गंभीर समस्या है। जनसंख्या असंतुलन के कई दुष्परिणाम हमारे सामने है।

राष्ट्रीय सुरक्षा एक व्यापक अवधारणा है जिसके विविध आयाम है। राष्ट्रीय सुरक्षा एवं शांति किसी भी राष्ट्र के विकास की अनिवार्य एवं प्राथमिक शर्त है। राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा केवल बाह्य आक्रमण एवं सशस्त्र संघर्ष से ही नहीं होता है बल्कि जनसंख्या का आकार एवं उसकी विविधता भी राष्ट्र की सुरक्षा से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जुड़ी हुई है। विशेषकर सीमावर्ती क्षेत्रों की जनसंख्या में असामान्य वृद्धि, अवैध घुसपैठ से राज्यों का बदलता जनांकिकीय राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक दृष्टि से विचारणीय प्रश्न है।

जनसंख्या एवं आर्थिक विकास के मध्य संबंध बेहद जटिल एवं अंत: क्रियात्मक है। यहीं वजह है कि जनसंख्या वृद्धि कुछ तरीकों से विकास की प्रक्रिया में मदद करता है और कुछ अन्य तरीकों से इसे बाधित भी करता है। किसी देश के आर्थिक विकास में उस देश में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों और पूँजी की मात्रा की जितनी महत्वपूर्ण भूमिका है उतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका उस देश के मानव संसाधनों की है जो कि इन भौतिक संसाधनों को दिशा एवं गति प्रदान करती है। परंतु जनसंख्या में असामान्य वृद्धि विकासशील राष्ट्र की अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव डालती है। बेरोजगारी, पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव एवं निम्न जीवन स्तर जैसी विभिन्न समस्याओं से आमजन को जूझना पड़ता है।

राष्ट्रीय सुरक्षा एवं आर्थिक विकास के जटिल एवं बेहद भंगुर संबंधों का विश्लेषण जनसांख्यिकीय असंतुलन के व्यापक परिपेक्ष्य में किया जाना है। इनसे जुड़े विभिन्न आयामों पर संगोष्ठी मे अकादमिक चर्चा अपेक्षित है।